وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ

और अल्लाह पाक साफ़ लोगों को पसंद करता है।
[सूरः तौबा, आएत : 108]

पाकी

के बुनियादी मसाईल

तहरीर

मुहम्मद मोनिस नक़्शबन्दी

तस्दीक़

(जनाब मौलाना उमर फ़ारूक़ साहब मुरादाबादी)

मोहतरम व मुकर्रम जनाब मुहम्मद मोनिस नक़्शबन्दी साहब....
अस्सलामुअलैकुम व रहमतुल्लाहि व ब-र-कातुहू...

बाद सलाम के अर्ज़ है कि अहक़र ने आपके जमा शुदा मसाइल का बा गौर मुता'ला किया, तमाम ही मसाईल को दुरुस्त पाया, लिहाज़ा बन्दा आप की आप की तहरीर की तस्दीक़ करता है, और दुआ करता हूं कि अल्लाह तआला आप की काविश (कोशिश) को क़ुबूल फ़रमाए, और उम्मत ए मुस्लिमा को आप की तहरीर से ज़्यादा से ज़्यादा इस्फ़ादा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए,

और उम्मत ए मुस्लिमा को पाकीज़गी वाली ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अल्लाहुम्मा आमीन या रब्बुल आलमीन।

उमर फ़ारूक़ ग़फ़ि-र- लहू मुरादाबादी...
27 शब जमादिउल आख़िर 1442 हिजरी

•••••••

●○●{ بسم الله الرحمن الرحيم }●○●

الحمدلله رب العالمين والصلاة والسلام على سيد المرسلين و آله و اصحابه اجمعين ۔ اما بعد !

तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं ,जो हम सब का रब है ,और उसका यह बहुत बड़ा एहसान है कि उसने हमें मुसलमान बनाया है , और दीन ए इस्लाम को हमारे लिए पसन्द फ़रमाया , इस्लाम एक ऐसा पाकीज़ा मज़हब है कि जिसमें पाकी का बहुत खयाल रखा गया है , पाकी के मसाइल ऐसे मसाइल हैं कि जिनका जानना हर एक के लिए बहुत ज़रूरी है। बल्कि फ़र्ज़ हैं ,आज कल जिहालत इतनी आम है कि हमें दीन के ज़रूरी मसाइल हत्ता कि बाज़ जगह , बाज़ लोगों को गुस्ल के तरीक़े का भी इल्म नहीं है ।

ज़रूरी है कि पाकी के कुछ बुनियादी और अहम मसाइल यहां ज़िक्र कर दिए जाएं , जिससे कम अज़ कम एक मुसलमान पाकी हासिल कर सके ।

● मसाइल : दीन की वह बातें जिन में अमल करने का तरीक़ा या उसका सही और गलत होना पाया जाए उनको "मसाइल" कहते हैं ।

☆ मसाइल सीखने की फ़ज़ीलत : हज़रत अबूज़र रज़ि. कहते हैं कि रसूल ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से फ़रमाया : ऐ अबूज़र ! अगर एक बाब इल्म का सीख लो , ख्वाह उस वक़्त का अमल हो या न हो (जैसे - गुस्ल या तयम्मुम वगैरह के मसाइल सीखना) हज़ार रका'अत नवाफ़िल पढ़ने से अफ़ज़ल है ।
[इब्न ए माजा : 219]

मसाइल किस तरह पढ़ें ।

मसाइल को समझने के लिए सिर्फ़ सरसरी मुताला काफ़ी नहीं है , बल्कि एक मस'अले को चाहिए कि बार - बार पढ़े ताकि अच्छी तरह ज़हन में बैठ जाए । जो मस'अला न समझ आए उसे किसी आलिम ए दीन से पूछ लें ।

● वुज़ू के फ़राईज़ ।

वुज़ू में 4 फ़र्ज़ हैं ।
[सूरः माइदा : आयत : 6]

1》 पेशानी के बालों से ठुडी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक पूरा चेहरा धोना ।

2》 दोनो हाथों को कोहनियों समेत धोना ।

3》 चौथाई सर का मसह करना।

4》 दोनो पाँव टख़नों समेत धोना ।
[शामी - 1, 235-247 , अरकान ए वुज़ू]

● इन फ़राइज़ में से एक भी फ़र्ज़ छूट गया तो वुज़ू नहीं होगा , मसलन् : पांव धोना भूल गया या पांव तो धोए लेकिन टखना छूट गया , या एक बाल के बराबर जगह भी सूखी रह गयी तो वुज़ू नहीं हुआ ।

● वुज़ू का मसनून तरीक़ा । नमाज़ पढ़ने से पहले वुज़ू करना ज़रूरी है, वुज़ू के बग़ैर नमाज़ नहीं होगी , वुज़ू का मसनून तरीक़ा यह है कि सबसे पहले पाकी हासिल करने की नियत करें , फ़िर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ कर वुज़ू शुरू करें , दोनों हाथ गट्टों तक

तीन मर्तबा धोएं , फ़िर मिसवाक करें , मिसवाक न हो तो (सीधे हाथ की बीच वाली) उंगली से दांत साफ करें , फ़िर तीन मर्तबा कुल्ली करें , फ़िर तीन मर्तबा दाएं (सीधे) हाथ से नाक में पानी डालें , और बाएं (उल्टे) हाथ (की छँगुली) से नाक साफ़ करे , फ़िर तीन मर्तबा पूरा चेहरा धोए , एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक और पेशानी के बालों से ठुडी के नीचे तक , फ़िर दाढ़ी का ख़िलाल करे , इस का तरीक़ा यह है कि दाएं हाथ में थोड़ा पानी लें और ठुडी के नीचे से उंगलियों को दाढ़ी में दाखिल करके ऊपर निकाल दे , फ़िर तीन मर्तबा दायां (सीधा) हाथ कोहनियों के ऊपर तक धोए , फ़िर तीन मर्तबा बायां हाथ कोहनियों के ऊपर तक धोए , फ़िर दोनों

हाथों की उंगलियों का खिलाल करे , इस का तरीक़ा यह है कि बाएं हाथ की हथेली दाएं हाथ की पुश्त (पीठ) पर रख कर उंगलियां एक दूसरे में डाल दें , फ़िर इसी तरह बाएं हाथ का खिलाल करें , फ़िर हाथ गीला करके एक बार पूरे सर का मसह करें , साथ ही कान

और गर्दन का भी मसह करें , फ़िर बाएं (उल्टे) हाथ से तीन मर्तबा दायां (सीधा) पैर टखनों के ऊपर तक धोएं , और पैर की उंगलियों का हाथ की छोटी उंगली (छँगुली) से खिलाल करें , फ़िर बायां पैर टखनों के ऊपर तक तीन मर्तबा धोएं , और खिलाल करें ,चेहरे हाथ और पैर को खूब मल कर धोएं , ज़ोर से पानी न मारें , आख़िर में वुज़ू के बाद की दुआ पढ़ लें ,
(अल्लाहुम्मज अलनी मिनत्तव्वाबी-न- वजअलनी मिनल मु-त- तह्हिरीन)
[शामी , 1/272 , किताबुत्तहारत]

● मस'अला : अगर दाढ़ी के बाल इतने घने हों कि खाल बाहर से दिखाई न दे , तो वुज़ू में खाल तक पानी पहुंचाना ज़रूरी नहीं है , बल्कि बालों के ऊपर से धो लेना काफ़ी है । (और अगर खाल दिखे तो खाल तक पानी पहुंचाना ज़रूरी है ।)

● दाढ़ी के जो बाल ठुडी से नीचे लटके हुए हों उनका धोना फ़र्ज़ नहीं है , बल्कि उनका खिलाल सुन्नत है ।
[शामी , 1/254 , किताबुत्तहारत]

● नवाक़िज़ ए वुज़ू ।

आठ (8) चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है उन्हें "नवाक़िज़ ए वुज़ू" कहते हैं ।

1》 पाखाना - पेशाब करना या इन दोनों रास्तों से किसी और चीज़ का निकलना ,

2》 रीह यानी हवा का पीछे से निकलना ,

3》 बदन के किसी मक़ाम से खून या पीप का निकलकर बह जाना,

4》 मुंह भर कर कै (उल्टी) करना ,

5》 लेटकर या सहारा लगाकर सो जाना ,

6》 बीमारी या किसी और वजह से बेहोश हो जाना ,

7》 पागल हो जाना ,

8》 नमाज़ ए जनाज़ा के अलावा किसी नमाज़ में क़हक़हा मारकर हंसना ।
[शामी : 1/365 - 396 , किताबुत्तहारत]

● गुस्ल के फ़राइज़ ।

गुस्ल में तीन (3) फ़र्ज़ हैं ।

1》 मुंह भर कर कुल्ली करना ,

2》 नाक की नर्म हड्डी तक पानी पहुंचाना ,

3》 पूरे बदन पर इस तरह पानी बहाना की एक बाल के बराबर जगह भी सूखी न रहे । [शामी : 1/427 , अबहासुल्गुस्ल]

● अगर किसी का इन फ़राइज़ में से एक भी फ़र्ज़ छूट गया तो गुस्ल नहीं हुआ , और जब गुस्ल नहीं हुआ तो पहले की तरह नापाक रहा , चाहे जितने ज़्यादा पानी से नहा ले , मसलन - पूरे बदन पर पानी बहाना फ़र्ज़ है , अब अगर एक बाल के बराबर जगह भी सूखी रह गयी तो गुस्ल नहीं हुआ ।

● इसीलिए चाहिए कि ऐसी जगह जहां पानी अपने आप नहीं पहुंचता है , जैसे - बगल , सुरीन , नाफ़ , कान , भौं , वगैरह ऐसी जगह तक पानी पहुंचाने का ख़ास एहतमाम करें ।

● मो'जिबात ए गुस्ल ।

जिन चीज़ों से गुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है , उन्हें " मो'जिबात ए गुस्ल कहते हैं ।

1》 ऐहतलाम का होना (नीन्द में मनी का निकलना) ,

2》 बेदारी में शहवत के साथ मनी का निकलना ,

3》 जिमाअ (हमबिस्तरी) करना , चाहे मनी न निकले,

4》 हैज़ के खून का बन्द हो जाना , निफ़ास के खून का बन्द हो जाना ।
[शामी : 1/453 - 470, किताबुत्तहारत]

● पेशाब के रास्ते से पेशाब के अलावा तीन चीज़ें और निकलती हैं :

1》 वदी : वह चिकना पानी जो पेशाब के बाद कभी-कभी निकलता है ।

2 》 मज़ी : वह पतला और चिकना पानी जो शहवानी ख़यालात , या मियां - बीवी के बोस व किनार के वक़्त निकलता है , उस के निकलने से जोश और ख्वाहिश खत्म नहीं होती ।

3》 मनी : वह गाढ़ा और चिकना पानी जो हमबिस्तरी या शहवत के ग़लबा पर निकलता है ,उस के निकलने के बाद शहवत और जोश खत्म हो जाता है ।

● मनी के निकलने से गुस्ल वाजिब हो जाता है , मज़ी और वदी इसी तरह औरत को सफ़ेद पानी आने से वुज़ू टूट जाता है, गुस्ल वाजिब नहीं होता ।

● [अलबत्ता बदन या कपड़े में लग जाए तो धोना ज़रूरी है ।]
[शामी : 1/472 , सुननुल्गुस्ल]

● मस'अला : जिस शख़्स पर गुस्ल वाजिब हो उस के लिए क़ुरआन ए करीम की तिलावत

करना और मस्जिद में दाखिल होना हराम है । अलबत्ता ज़िक्र व तस्बीह और मसनून दुआएं पढ़ना दुरुस्त है ।
[शामी : 1/493-497]

● नजासत के मसाइल ।

○ नजासत नापाकी और गंदगी को कहते हैं ।

नजासत की दो क़िस्में हैं ।
1》 नजासत ए ग़लीज़ा ,
2》 नजासत ए ख़फ़ीफ़ा ।

1》 नजासत ए ग़लीज़ा ।
नजासत ए ग़लीज़ा गाढ़ी नापाकी को कहते हैं।

1》 इन्सान के जिस्म से निकलने वाली वह तमाम चीज़ें जिन से गुस्ल या वुज़ू वाजिब हो जाता है , जैसै - पेशाब, पाखाना, खून , पीप , मुंह भर के क़ै (उल्टी), वदी , मज़ी , मनी, हैज़ , निफ़ास और इस्तिहाज़ा का खून,

दूध पीते बच्चे का पेशाब भी नजासत ए ग़लीज़ा है ।
2》 हराम जानवर या कुत्ता, बिल्ली , गधा , वगैरह का पेशाब, पाखाना, खून ,पीप , दूध , पसीना और लुआब (राल) नजासत ए ग़लीज़ा है । अलबत्ता बिल्ली और गधे का लुआब और पसीना पाक है ।

3》 हलाल जानवर या गाय बकरी घोड़ा वगैरह का खून , पाखाना और पीप नजासत ए ग़लीज़ा है ।

4》 हर क़िस्म की शराब और मुर्गी व बतख की बेट नजासत ए ग़लीज़ा है।

5》 सुवर के तमाम अजज़ा नजासत ए ग़लीज़ा हैं ,

6》 वह मुर्दार जिस में बहता हुआ खून हो जैसे मुर्दार बकरी मरा हुआ कबूतर नजासत ए ग़लीज़ा है ।
[बदाए उस्सनाए : 1/60-66]

2》 नजासत ए ख़फ़ीफ़ा ।
○ नजासत ए ख़फ़ीफ़ा हल्की नापाकी को कहते हैं ।
1》 हलाल जानवर जैसे- गाय बकरी वग़ैरह का पेशाब । नजासत ए ख़फ़ीफ़ा है ।
[बदाए उस्सनाए 1/81]

2》 हराम परिन्दे जैसे - कौवा, चील, गिद्ध वग़ैरह की बेट । नजासत ए ख़फ़ीफ़ा है ।
[शामी : 2/81]

1》 नजासत ए ग़लीज़ा का हुक्म ।

● नजासत ए ग़लीज़ा कपड़े या बदन पर लग जाए , तो उसकी 2 सूरतें हैं । 1》 अगर वह पतली है , जैसे - पेशाब, खून वगैरह तो एक दिरहम और हिन्दुस्तानी एक रूपये के बड़े सिक्के के फैलाव के बराबर है तो माफ़ है , माफ़ होने का मतलब यह है कि अगर इतनी नजासत बदन या कपड़े पर लगी हो और नमाज़ पढ़ ले तो नमाज़ हो जाएगी, मगर मकरूह होगी , क़सदन (जानबूझकर) इतनी

भी नजासत लगे रखना जाएज़ नहीं ।
[तालीमुल् इस्लाम 2/49]

और अगर एक रूपये से ज़्यादा हो तो माफ़ नहीं है , उसको धोए बगैर नमाज़ न होगी ।
[शामी : 2/467 - 472]

● अगर नजासत ए ग़लीज़ा गाढ़ी है जैसे गोबर तो वज़न में साढ़े तीन माशा [4 ग्राम , 374 मिली ग्राम माफ़ है , धोए बगैर नमाज़ दुरुस्त होगी , (लेकिन न धोना और इसी तरह नमाज़ पढ़ते रहना मकरूह है । और अगर तीन माशा से ज़्यादा हो तो माफ़ नहीं , बगैर धोए नमाज़ न होगी ।
[शामी : 2/467 - 472]

2》 नजासत ए ख़फ़ीफ़ा का हुक्म ।
○ नजासत ए ख़फ़ीफ़ा कपड़े या बदन पर लग जाए , तो जिस हिस्से में लगी है , उसके चौथाई (1/4) से कम हो तो माफ़ है , और अगर चौथाई या उससे ज़्यादा हो तो माफ़ नहीं है । जैसे - अगर आस्तीन में लगी है , तो

आस्तीन के चौथाई से कम लगी हो , इसी तरह अगर नजासत ए ख़फ़ीफ़ा हाथ पर लगी है , तो हाथ के चौथाई से कम हो तो माफ़ है , (और अगर चौथाई या चौथाई से ज़्यादा लगी हो तो माफ़ नहीं ।
[शामी : 2/487]

● मस'अला - अगर थोड़ी भी नजासत ए ग़लीज़ा या ख़फ़ीफ़ा पानी में गिर जाए तो पानी नापाक हो जाएगा ।
[शामी : 2/490]

मुर्गी और बतख के अलावा तमाम हलाल परिन्दे जैसे- कबूतर , चिड़िया वगैरह की बेट पाक है ।
[बदाए उस्सनाए : 1/62]

● नापाक कपड़े को पाक करने का तरीक़ा ।

○ कपड़े, चादर , वग़ैरह और ऐसी चीज़ें जो निचोड़ी जा सकें उन पर नजासत लग जाए तो नजासत दूर करके (हटा कर) उन्हें तीन

मर्तबा धोना और हर मर्तबा अच्छी तरह निचोड़ना ज़रूरी है , वरना यह चीज़ें पाक न होंगी ।
[शामी : 3/19 , बाबुल्अन्जास]

● औरतों के मख़सूस मसाइल ।
○ हैज़ और इस्तिहाज़ा ।

● हैज़
हर माह जो आगे की राह से मामूली ख़ून आता है उस को हैज़ कहते हैं ।

○ मस'अला - कम से कम हैज़ तीन दिन तीन रात है और ज़्यादा से ज़्यादा दस दिन दस रात है , किसी को तीन दिन तीन रात से कम ख़ून आया तो वह हैज़ नहीं बल्कि इस्तिहाज़ा है , कि किसी बीमारी वगैरह की वजह से ऐसा हो गया है । और अगर दस दिन - रात से ज़्यादा खून आया तो , जितने दिन दस से ज़्यादा खून आया वह भी इस्तिहाज़ा है।
[इस्तिहाज़ा के अहकाम आगे आएंगे]
[बहिश्ती ज़ेवर, 2/271]

○ हैज़ के ज़माने में नमाज़ और रोज़ा रखना दुरुस्त नहीं , इतना फ़र्क है कि नमाज़ तो बिल्कुल माफ़ हो जाती है, पाक होने के बाद भी उस की क़ज़ा वाजिब नहीं होती, लेकिन रोज़ा माफ़ नहीं होता , पाक होने के बाद क़ज़ा रखने होंगे ।
[बहिश्ती ज़ेवर , 2/276]

○ हमल के ज़माने में जो खून आए वह भी हैज़ नहीं बल्कि इस्तिहाज़ा है , चाहे जितने दिन आए ।
[बहिश्ती ज़ेवर, 2/275]

● हालत ए हैज़ में एक मुस्तहब अमल ।

ख़्वातीन के लिए हैज़ के ज़माने में एक मुस्तहब अमल यह है कि नमाज़ के अवक़ात में वुज़ू करके किसी पाक जगह बैठकर थोड़ी देर तस्बीह वगैरह पढ़ लिया करें , ताकि इबादत का एहतमाम बरक़रार रहे और पाकी के बाद नमाज़ पढ़ने से दिल न घबराए ।
[किताबुल मसाइल : 1/219]

● निफ़ास

● बच्चा पैदा होने के बाद आगे की राह से जो खून आता है उस को निफ़ास कहते हैं , ज़्यादा से ज़्यादा निफ़ास के चालीस (40) दिन हैं , और कम से कम कोई हद नहीं , अगर किसी को एक-दो घड़ी आकर खून बन्द हो जाए तो वह भी निफ़ास है ।
[बहिश्ती ज़ेवर , 2/280]

● निफ़ास के बारे में एक गलत फहमी ।

निफ़ास की ज़्यादा से ज़्यादा मुद्दत चालीस (40) दिन है , इसका यह मतलब नहीं कि उस से कम दिन में खून बन्द नहीं हो सकता , लिहाज़ा जब भी खून बन्द हो जाए औरत को पाकी हासिल करके नमाज़ वगैरह शुरू करना लाज़िम है , चालीस दिन का इन्तज़ार करना जाएज़ नहीं है ।
[किताबुन्नवाज़िल , 3/203]

● हैज़ और निफ़ास की हालत में जिमा (हमबिस्तरी) हराम है ।

○ हैज़ और निफ़ास की हालत में बीवी से हमबिस्तरी करना क़तअन हराम है , [किताबुल मसाइल : 1/225]

क़ुर'आन ए करीम में इसकी मुमानेअत (मना होना) वारिद है , क़ुर'आन ए करीम में अल्लाह तआला का इर्शाद है - " और लोग आप से हैज़ के बारे में पूछते हैं , आप कह दीजिए कि वो गन्दगी है , लिहाज़ा हैज़ की हालत में औरतों से अलग रहो , और जब तक वह पाक न हो जाएं उन से क़ुर्बत (यानी जिमा' , हमबिस्तरी) न करो , हां जब वो पाक हो जाएं तो उन के पास उसी तरीक़े से जाओ , जिस तरह अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है , बेशक अल्लाह उन लोगों से मुहब्बत करता है जो उसकी तरफ़ कसरत से रुजू करे और उन से मुहब्बत करता है जो खूब पाक साफ़ रहें । [सूरः बक़रः आएत 222 , तर्जुमा आसान क़ुर'आन , मुफ़्ती तक़ी उस्मानी साहब]

● हैज़ के ज़माने में हमबिस्तरी के अलावा तमाम बातें यानी साथ में खाना - पीना , लेटना , बैठना वगैरह दुरुस्त है , (लेकिन औरत के नाफ़ से लेकर घुटने तक का जिस्म मर्द के किसी उज़्व से मस (Touch) न हो । [बहिश्ती ज़ेवर , 2/277]

● इस्तिहाज़ा के एहकाम ।

मस'अला - इस्तिहाज़ा का हुक्म ऐसा है जैसे किसी की नकसीर फूटे और बन्द न हो , ऐसी औरत नमाज़ भी पढ़े , रोज़ा भी रखे क़ज़ा न करना चाहिए , और उस से सोहबत करना भी दुरुस्त है । इस्तिहाज़ा के एहकाम बिल्कुल माज़ूर के एहकाम की तरह है । [बहिश्ती ज़ेवर, 2/280]

इस्तिहाज़ा और माज़ूर के एहकाम ।

जिस को ऐसी नकसीर फ़ूटी हो कि किसी तरह बंद नहीं होती, या कोई ऐसा ज़ख्म है कि बराबर बहता रहता है कोई सा'अत (घड़ी)

बन्द नहीं होता, या पेशाब की बीमारी है , कि हर वक्त क़तरा आता रहता है इतना वक़्त नहीं मिलता कि पाकी की हालत में नमाज़ पढ़ सके , तो ऐसे शख़्स को माज़ूर कहते हैं । उस का हुक्म यह है कि हर नमाज़ के वक़्त वुज़ू कर लिया करे , जब तक वह (नमाज़ का) वक़्त रहेगा तब तक उसका वुज़ू बाक़ी रहेगा, अलबत्ता जिस बीमारी में मुब्तिला है , अगर उसके सिवा अगर कोई ऐसी बात पायी जाए जिस से वुज़ू टूट जाता है , तो वुज़ू जाता रहेगा (टूट जाएगा) और फिर से वुज़ू करना पड़ेगा, उसकी मिसाल यह है कि किसी को ऐसी नकसीर फूटी कि किसी तरह बन्द नहीं होती , उसने ज़ोहर के वक़्त वुज़ू कर लिया, तो जब तक ज़ोहर का वक़्त रहेगा नकसीर के खून (निकलने) की वजह से उसका वुज़ू नहीं टूटेगा, अलबत्ता अगर पाखाना - पेशाब गया या हवा ख़ारिज हो गयी या सूई चुभने से खून बहने लगा, तो वुज़ू टूट जाएगा, फिर वुज़ू करें , जब यह वक़्त चला गया दूसरी नमाज़ का वक़्त आ गया तो अब दूसरे वक़्त दूसरा वुज़ू करना चाहिए । इसी तरह हर नमाज़ के

वक़्त वुज़ू कर लिया करें , और उस वुज़ू से फ़र्ज़ नफ़्ल जो नमाज़ चाहें पढ़ें ।
[बहिश्ती ज़ेवर : 2/90]

• यही एहकाम इस्तिहाज़ा के हैं कि हर नमाज़ के लिए अलग - अलग वुज़ू करती रहें ।

नोट :- यहां पाकी - नापाकी के ख़ास - ख़ास मसाइल ही बयान हो सके हैं जबकि बहुत से मसाइल छूट गये हैं , मज़ीद तफ़सीलात के लिए बहिश्ती ज़ेवर (मुसन्नफ़ हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह.) किताब को पढ़ें । कोई मस'अला समझ न आए तो किसी आलिम ए दीन से पूछ लें ।

● यह तमाम मसाइल खुद भी समझें और इन्हें दूसरों तक भी पहुंचाएं ताकि तमाम मुसलमान भाई-बहन पाक - साफ़ रह सकें । खुसूसन - मां अपनी बेटी और बाप अपने बेटे को ताकि बचपन से पाकी का आदी बन सके ।

अल्लाह तआला हम सब को अमल कलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और पाक - साफ़ ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए । आमीन ।

- इस तहरीर को दूसरों तक पहुंचाने में मदद करें । अपने रिश्तेदार, दोस्त अहबाब तक पहुंचाएं ।

मज़ीद किताबें (अवाम में मशहूर ग़लत बातें , क़ज़ा -ए- उमरी , अल्लाह की याद , वगैरह Pdf में पढ़ने के लिए moniskhanhanfi1@gmail.com पर राब्ता क़ायम करें ।

अहक़र को अपनी दुआओं में याद रखें ।

و آخر دعوانا انا الحمد لله رب العالمين ...